Pankaj:Layout 1 2/22/2016 12:10 PM Page 1

ज्ञान शांति मैत्री

नव सम्प्रेषण

e-xk-v-fg-fo-fo-] o/kk d tul|pkj foHkkx d fo|kfFk;k dk ik;kfxd v[kckj

www.mediasamay.com

रविवार, वर्धा, 21 फरवरी, 2016 अंतः संकाय खेल प्रतियोगिता विशेषांक

कुलपति एकादश ने प्रदर्शनी फुटबॉल मैच में कुलसचिव एकादश को हराया

शपथ लेते खिलाड़ी

उद्घाटन करते कुलपति

कुलपति एवं कुलसचिव एकादश के फुटबॉल खिलाड़ी

पंकज कुमार

वि.वि. वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में पिछले दिनों अंतः संकाय वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के मेजर ध्यानचंद क्रीड़ा प्रांगण में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया और उनके उत्साहवर्धक भाषण के बाद इस प्रतियोगिता की विधिवत शुरुआत हुई। इस अवसर पर प्रतियोगिता में भाग ले रहे सभी खिलाड़ियों ने शपथ ली। खेल प्रतियोगिता का प्रारम्भ प्रदर्शनी फुटबॉल मैच से हुआ जिसमें कुलपति एकादश का मुकाबला कुलसचिव एकादश से हुआ। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने इस प्रदर्शनी मैच में 'कुलपति एकादश' टीम की कप्तानी कर रोमांचक जीत हासिल की। उनकी टीम ने कुलसचिव एकादश को 4–1 से हराकर यह जीत दर्ज की। कुलसचिव एकादश टीम का नेतृत्व कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया लेकिन अपने टीम को हार से नहीं बचा सके। हालांकि सभी खिलाड़ियों ने खेल भावना का प्रदर्शन करते हुये खेल के इस फुटबॉल प्रारूप का जमकर लुत्फ उठाया। इस अवसर पर कवि बुद्धिनाथ मिश्र, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के प्रो. देवराज, खेल समिति के प्रभारी डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, खेल समिति के अध्यक्ष प्रो. विजय कुमार कौल, प्रदर्शनकारी कला विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे, स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक, शिक्षा विद्यापीठ के डॉ. गोपाल ठाकुर, भाषा अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल पांडेय, डॉ. धूपनाथ प्रसाद, डॉ. संदीप वर्मा, डॉ. रवि कुमार, सुरभि समेत कई शिक्षक गैर शिक्षक कर्मी एवं विश्वविद्यालय के शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद थे।

महिला क्रिकेट में ओजस्वी का टायगर से हुआ रोमांचक मुकाबला

पदमा वर्मा

वि.वि. वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में संपन्न हुए वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता की क्रिकेट स्पर्धा में छात्राओं की ओजस्वी टीम ने टाइगर टीम को 12 रनों से हरा दिया। मधुप्रिया की कप्तानी और मिलन कुजूर की उपकप्तानी में ओजस्वी टीम ने यह जीत हासिल की। वहीं टायगर टीम की कप्तान नेहा बलवीर और उपकप्तान प्रियंका सिंह की टीम ने भरपूर जोर आजमाइश की लेकिन अंततः जीत ओजस्वी के खाते में चली गयी। हालांकि सभी खिलाड़ियों ने अपना पूरा योगदान अपनी–अपनी टीमों को दिया। मैच काफी रोमांचक था जिसे देखने के लिए दर्शकों की अच्छी खासी भीड़ उपस्थित थी जो छात्राओं का उत्साहवर्धन कर रही थी। क्रिकेट के सभी मैच मेजर ध्यानचंद क्रीड़ा प्रांगण में खेले गए।

जीत का जश्न मनाती विजयी टीम

विजयी टीम की अन्य खिलाड़ियों में स्नेहा कुमारी, कंचन, प्रीति दुबे, दुर्गेश्वरी, दुर्गा मसराम, डॉली, सविता कोल्हे, सारिका, सुमन, उज्जवल ,शिल्पा गुप्ता, अमृता और चंचल ने भी अपने खेल का प्रदर्शन किया। टाइगर टीम में गोदावरी ठाकुर, प्रिया माली, किरण खंडेराव, रंजीता कोडापे, स्नेहा, सुनीता गुरुम, नीतू थापा, वैशाली, जयंती, पूजा बंजारे, नम्रता ठाकुर, भारती दिघोरे व पद्मा वर्मा ने अपना योगदान दिया।

खेल प्रतियोगिता में योग भी शामिल

सौरभ राय

हिंदी विश्विद्यालय में खेल प्रतियोगिता में पहली बार योग को भी एक स्पर्धा के रूप में शामिल किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन शिक्षा विद्यापीठ में किया गया जिसमें सयोंजक के रूप में डॉ. ज्योतिष पायें, सह–सयोंजक डॉ. अरुण प्रताप सिंह एवं सारिका राय शर्मा शामिल थी। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के नियमानुसार दो आसन सामान थे तथा तीसरा एक कोई भी आसन अपने अनुकूल करना था। इसमें जज के रूप में डा. अरुण प्रताप सिंह, डा. ज्योतिष पायें, डा. सुनील विश्वकर्मा उपस्थित थे। प्रतियोगिता में 45 अंक लेकर हिंदी विभाग के छात्र अमित कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, 39.74 के साथ दिनेश पटेल ने द्वितीय और तृतीय पुरस्कार पंकज कुमार सिंह ने प्राप्त किया। डॉ. अरुण प्रताप सिंह ने इस आयोजन पर बताया कि योग भारतीय देशज परम्परा से मौलिक रूप से जुड़ा हुआ है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रिय हिंदी विश्विद्यालय के नाम का आशय ही विश्लेषित करें तो यह स्पष्ट होता है कि इस विश्वविद्यालय में योग से सम्बंधित पठन पाठन एवं प्रतियोगिताएं आवश्य होनी चाहिए।

अपने प्रयोजन में दृढ़ विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रूख को बदल सकता है : महात्मा गांधी

Pankaj:Layout 1 2/22/2016 12:10 PM Page 2

किसी भी कार्य को एक मिशन के रूप में करता हूँ : डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी

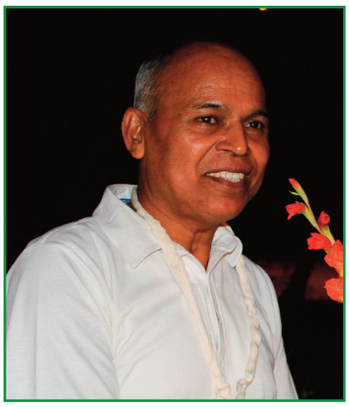

डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी

सुनील कुमार उसेंडी

वि.वि. वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में आयोजित अंतः संकाय वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता के प्रभारी डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी से जनसंचार विभाग के छात्र सुनील कुमार उसेंडी की बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं।

सद्यः सम्पन्न खेल प्रतियोगिता के संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे ?

डॉ. मोदी : खेल से मेरा लगाव विद्यार्थी जीवन से ही रहा है और मैं अपने कॉलेज का तीन बार बैडमिंटन चैम्पियन भी रह चुका हूँ। इसलिए इस प्रभार का निर्वाह मैं मिशन के रूप में कर रहा हूँ न कि कमीशन के रूप में। मैं पूरे मनोयोग और ईमानदारी से इस प्रतियोगिता को संपन्न कराने के लिए प्रतिबद्ध रहा।

इस वर्ष किन–किन खेलों को शामिल किया गया और प्रतिभागियों के लिए क्या प्रावधान थे ?

डॉ. मोदी : इस वर्ष कुल 11 खेल शामिल किये गए थे जिनमें बैडमिंटन, वॉलीबॉल, शतरंज, एथेलेटिक्स, डिस्कस थ्रो, जैवलिंक थ्रो, शॉटपुट, लॉन्गजम्प, टेबल–टेनिस, क्रिकेट व योग शामिल थे। सभी प्रतिभागी २७ टीमों में वर्गीकृत थे, खेलों के अनुसार पुरस्कार की व्यवस्था की गई थी। क्रिकेट और वॉलीबॉल के विजेता और उप–विजेता टीम के लिए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक निर्धारित किये गए थे जबकि व्यक्तिगत प्रतियोगिताएं जैसे – बैडमिंटन, शतरंज, योग आदि के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को स्मृति–चिह्न के साथ–साथ व्यक्तिगत प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया।

इस प्रतियोगिता को आयोजित कराने में आपको किस तरह की परेशानी महसूस हुई ?

डॉ. मोदी : गौरतलब है कि इस वि.वि. में कोई अलग से न तो खेल विभाग है और न ही वित्तीय प्रबन्धन। परिणामस्वरूप खेल प्रतियोगता आयोजित करवाने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खेल–शिक्षक के न होने की वजह से भी खेल सुव्यवस्थित ढंग से निरंतर संचालित नहीं हो पाता। खेल सामाग्री की कमी एवं विद्यार्थियों में खेल सामाग्री के प्रति उदासीनता भी खेल को सुचारू रूप से संचालित करने में बाधा उत्पन्न कर देती है।

विजयी टीम अथवा विजेताओं के भविष्य के विषय में क्या कहना चाहेंगे ?

डॉ. मोदी : विश्वविद्यालय द्वारा निर्गत प्रमाण–पत्र प्रतिभागियों को भविष्य में किसी–न–किसी रूप में जरूर फायदेमंद साबित होगा। विश्वविद्यालय का यह भी प्रयास रहेगा कि जो खिलाड़ी श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने का अवसर दिया जाएगा।

कोई सुझाव या सन्देश प्रतिभागियों को देना चाहेंगे ?

डॉ. मोदी : सभी प्रतिभागियों के लिए यही सन्देश है कि खेल को खेल भावना के साथ खेलें तथा इसे अपनी दिनचर्या में भी शामिल करें ताकि वे निरंतर इससे जुड़े रहें।

खेल को बढ़ावा देने के लिए अलग संकाय की अपील

प्रियंका अस्थाना

वि.वि. वर्धा। विश्वविद्यालय के खेल मैदान को पांच परतों से मजबूत करवाया गया जिससे विश्वविद्यालय का मैदान वर्धा के सबसे मजबूत खेल के मैदानों में शामिल हो गया है। प्रतियोगिता में अनेक खेल जैसे 100 मी. 200 मी. 400 मी. दौड़, भाला फेंक, फुटबॉल, डिस्कस थ्रो, गोला फेंक, लम्बी कूद, टेबल टेनिस, बॉलीबॉल, योग, शतरंज, क्रिकेट और बैडमिंटन के लड़के व लड़कियों की अलग–अलग प्रतिस्पर्धाएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिता के प्रारम्भ में खेल संयोजक के रूप में नियुक्त विश्वविद्यालय के 'विकास एवं शांति अध्ययन' विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने अपने भाषण में प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और कुलपति से विश्वविद्यालय में खेल आयोजनों को बढ़ावा देने के लिए एक अलग संकाय बनवाने की अपील की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के उत्साहवर्धक भाषण के बाद खेल की शुरुआत हुई। खेलों को 'मैच्योर' अध्यापक प्रतिस्पर्धा और 'एमैच्योर' विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा में विभाजित किया गया। प्रतियोगिता में अध्यापकों तथा विद्यार्थीयों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

शतरंज प्रतियोगिता में खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

वि.वि. वर्धा। विश्वविद्यालय के प्रांगण में सम्पन्न हुए शतरंज प्रतियोगिता को तीन चरणों में खेला गया। पहले चरण के शतरंज 'छात्र प्रतिस्पर्धा' में प्रथम स्थान पर स्त्री अध्ययन विभाग के श्याम प्रकाश, द्वितीय स्थान पर भाषा प्रद्योगिकी विभाग के अरुण कुमार पाण्डेय और तृतीय स्थान पर शिक्षा विभाग के ऋषिकेश बहादुर ने जीत हासिल की। वहीं दूसरे चरण के शतरंज 'छात्रा प्रतिस्पर्धा' में प्रथम स्थान पर मानव विज्ञान विभाग की पूजा वंजारे और द्वितीय स्थान पर भाषा प्रद्योगिकी विभाग की मधुप्रिया ने जीत हासिल की। तीसरे चरण के शतरंज 'एमैच्योर प्रतिस्पर्धा' में प्रथम स्थान पर डायस्पोरा अध्ययन विभाग के विवेकानंद राय, द्वितीय स्थान पर विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के भूषण साल्वे और तृतीय स्थान पर जनसंपर्क कार्यालय के दीपक साल्वे ने जीत हासिल कर अपना उपस्थिति दर्ज किया।

छात्र वर्ग में इम्तियाज को मिला बैडमिंटन का खिताब

पीयूष भारद्वाज

वि.वि. वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में हुए वार्षिक खेल प्रतियोगिता में बैडमिंटन में कुल 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें चार महिलायें, आठ स्टाफ वर्ग और शेष छात्र शामिल थे। पहले चरण के मैच के बाद प्रतियोगिता में आठ प्रतिभागियों ने क्वाटर फाइनल में जगह बनायी जिसमें आकाश, इम्तियाज अंसारी, मृदुल शर्मा, मिथिलेश, आशीष इतवारे, जैनेन्द्र सिंह, राकेश राय और जयप्रकाश गुप्ता शामिल थे। क्वार्टर फाइनल मैच के बाद चार प्रतिभागी आकाश, इम्तियाज, जैनेन्द्र एवं राकेश राय ने सेमी फाइनल में अपना स्थान पक्का किया। सेमी फाइनल मैच के दौरान दो प्रतिभागी इम्तियाज अंसारी और राकेश राय ने फाइनल में जगह बनायी और अंततः फाइनल मैच में इम्तियाज विजेता के रूप में उभर कर सामने आये, मैच के बाद इम्तियाज को प्रथम, राकेश को द्वितीय तथा

जैनेन्द्र सिंह को तृतीय विजेता घोषित किया गया। इम्तियाज जनसंचार के शोधार्थी हैं और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

टाइटेनिक टाइगर्स को खिताब

भावना शर्मा

वि.वि. वर्धा। विश्वविद्यालय के ध्यानचंद मैदान में वालीबॉल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. वालीबॉल प्रतियोगिता में कुल दस टीमों ने भाग लिया जिसमें चार एमेच्योर टीमें थीं। पहला मैच टाइटेनिक टाइगर्स और सोशल वर्क के बीच खेला गया जिसमें टाइटेनिक टाइगर्स ने सोशल वर्क को दो सेटो में 25–16 व 25–12 से हराया। सोशल वर्क ने राकर्स को 25–16 व 25–15 से तथा शिक्षा विद्यापीठ ने मिस्ट्री मेकर्स को 25–05 व 25–07 से हराया। क्रमशः चार टीमें सेमी फाइनल में पहुंची, जिसमें टाइटेनिक टाइगर्स ने शिक्षा विद्यापीठ को तीन सेटों में 25–09, 25–11 व 25–15 तथा आर्म्स क्लब ने शोसल वर्क को 25–15, 25–09 व 25–11 से हराया और अन्ततः फाइनल मैच टाइटेनिक टाइगर्स और आर्म्स क्लब के बीच हुआ जो पांच सेटों तक चला जिसमें टाईटेनिक टाइगर्स विजेता बना।

Pankaj:Layout 1 2/22/2016 12:10 PM Page 3

संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण कहानी है मति नंदी की 'एथलीट'

पदमा वर्मा

वि.वि. वर्धा। यह ऐसी कहानी है, जो पूरी तरह मीडिया पर केन्द्रित है और उस पर एक व्यंग भी करती है। पत्रकारों की स्थिति, भूमिका व उनके कार्यों से परिचित कराया गया है। इस कहानी के बहुत से पहलू हमने सुने, जो एक पत्रकार के लिए या हम जैसे भावी पत्रकारों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इस कहानी में दर्शाया गया है कि कैसे एक खेल के खिलाड़ी एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा रखते हुए भी एक खिलाड़ी (अविनाश) अपने मित्र खिलाडी या अपने प्रतिद्वंद्वी के खेल की गलत खबर छपने के खिलाफ लड़ रहे हैं। वह अपने मित्र खिलाड़ी की गलत खबर छपने से, जो कि उस खिलाड़ी की प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाती है, के लिए एक पत्रकार से उलझ रहे हैं। 30 वर्ष बीत जाने के बाद भी वह उस गलत खबर को सुधार करने में अपनी पूरी ताकत लगा रहे हैं। परन्तु वह खेल पत्रकार सबूत की गुहार लगा रहा हैं। अविनाश ने पूरे जी–जान लगा कर सबूत इकट्ठा किया और प्रस्तुत किया, फिर भी उस पत्रकार ने

एथलीट के रचयिता बांग्ला लेखक व पत्रकार मति नंदी

उसे नहीं छपा। इससे यह प्रदर्शित होता है कि वह पत्रकार (चितरंजन), पत्रकार नहीं है क्योंकि पत्रकार कभी अपने दायित्वों से पीछे नहीं हटता। उसने पत्रकार की जिम्मेदारी और दायित्वों को नहीं निभाया। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हम भविष्य में कभी भी कोई ऐसी खबर न छापें या न दें जिससे कि जनता का हमारी खबर या मीडिया से ही विश्वास उठ जाए।

मीडिया पर केन्द्रित कहानी है 'एथलीट'

दक्षम द्विवेदी

वि.वि. वर्धा। मति नंदी द्वारा लिखित कहानी "एथलीट" मूलतः नैतिकता, स्वाभिमान एवं पत्रकारिता के महत्वपूर्ण बिन्दुओं से ओत–प्रोत एक संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण कहानी है। कहानी का शीर्षक "एथलीट" पाठकों और श्रोताओ को अपनी ओर आकर्षित करता है। एक खिलाड़ी की नैतिकता एवं उसके मूल्यों का स्पष्ट स्वरुप कहानी में अविनाश मजूमदार के रूप ने स्थापित किया गया है तो वहीं दूसरी ओर पत्रकार चितरंजन घोषाल का उसके पेशे के प्रति ईमानदार न होना और पेशे में बाजारवाद का हावी होना पाठक को बेचैन करता है। कहानी में खेल पत्रकारिता को लेकर लचर रवैये और किस प्रकार बिना तत्थों की जाँच किये खबरों के प्रकाशन और उससे एक खिलाड़ी की भावनाएं कैसे आहत हुई, इसका प्रस्तुतीकरण बहुत मार्मिक है।

पत्रकार की जिम्मेदारियों और नैतिकता पर करारा व्यंग्य

अमित मिश्रा

वि.वि., वर्धा। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग में शुक्रवारी कार्यक्रम के तहत अनुवाद विषय पर व्याख्यान एवं मति नंदी द्वारा लिखित कहानी "एथलीट" के पाठ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में वि.वि. के अतिथि लेखक डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. कृपाशंकर चौबे ने की। मुख्य अतिथि श्री मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा की अनुवाद की पृष्ठभूमि और नैतिकता को समझना बहुत आवश्यक है अनुवाद के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान आवश्यक है। अनुवाद में साहित्यिक शब्दों की महत्ता एवं उनके विभिन्न स्वरुप को समझना बहुत आवश्यक है श्री मिश्र ने कहा की सरकारी संस्थानों में अनुवाद की सार्थकता के लिए अभी बहुत प्रयास किये जाना बाकी है। व्याख्यान के दौरान श्री मिश्र ने सभागार में उपस्थित छात्रों को अनुवाद के लिए कुछ तथ्य भी दिए और उसके बारे में तर्कपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला।

कहानी पाठ करते डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में कहानी पाठ का आयोजन किया गया जहाँ मति नंदी की कहानी "एथलीट" का पाठ भी डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने किया कहानी खेल–पत्रकारिता और पत्रकारिता में नैतिकता पर आधारित थी। कहानी के माध्यम से एक पत्रकार की जिम्मेदारियों और नैतिकता पर कटाक्ष किया गया। एक खिलाड़ी की नैतिकता और खेल भावना को प्रदर्शित करती कहानी में जहाँ एक ओर पत्रकारिता में खेल समाचारों की स्थिति का वर्णन किया गया वहीं पत्रकार को दशा और भविष्य की दशा की ओरभी इंगित किया गया कहानी पाठ के उपरांत छात्रों ने भी कहानी के सन्दर्भ में अपने विचार रखे और कहानी को लेकर अपने अलग–अलग दृष्टिकोण से कहानी का खेल–पत्रकारिता के लिए महत्व बताया।

पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल अंकित राय ने अपने उद्बोधन में अनुवाद की विभिन्न कलाओं और पत्रकारिता में अनुवाद की स्थिति को लेकर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया एवं कहानी पाठ पर टिप्पणी करते हुए कहानी के खेल पत्रकारिता के लिए मायने को प्रस्तुत किया एवं छात्रों को भविष्य में नैतिकता को ध्यान में रखकर पत्रकारिता करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रमके अंत में विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अख्तर आलम, श्री राजेश लहेकपुरे, श्री संदीप वर्मा ने कार्यक्रम के दौरान अपने उद्बोधन से छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृपाशंकर चौबे ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अनिल कुमार राय 'अंकित' ने किया। कार्यक्रम के दौरान एम.ए., एम.फिल. एवं पी.एच. डी के छात्र शोधार्थी उपस्थित रहे।

खेल पत्रकारिता के मुंह पर तमाचा

अरुण कुमार जायसवाल

वि.वि., वर्धा। खेल पत्रकारिता पर केंद्रित 'एथलीट' नामक कहानी मुख्य रूप से दो पहलुओं के इर्द–गिर्द घूमती है। मति नंदी लिखित यह कहानी एक खिलाड़ी के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करती है तो दूसरी तरफ पत्रकारिता के दायित्वों पर भी सवाल खड़ा करती है। एक तरफ अविनाश जो कि एक जमाने में प्रसिद्ध खिलाड़ी हुआ करता था, आज स्टोव रिपेयरिंग कर अपना जीवन यापन कर रहा है, जिसके पास न तो पहनने के लिए शानदार कपडे और ना ही सोने के लिए गद्देदार बेड है। अविनाश अपने मित्र हर्षित से संबंधित सच को सामने लाने के लिए लगातार अखबारी दफ्तर के चक्कर काटता रहता लेकिन उसे उस सच को सामने लाने की कीमत अपने घर और दुकान को गिरवी रखकर चुकानी पड़ती है। दूसरी तरफ चितरंजन जो कि एक संपादक है, वह अपने दायित्वों का अच्छी तरह निर्वहन करने के बजाय अविनाश की बातों व प्रयासों को हल्के में लेता है। जो काम एक पत्रकार का था कि वह खबरों का परीक्षण करे और तब जनता के समक्ष लाये, वह काम अविनाश ने खुद किया फिर भी उस खबर को नजरंदाज किया गया। कहीं न कहीं यह पूरी कहानी खेल पत्रकारिता जगत के मुंह पर एक तमाचा है। उस समय भी जब हर्षित से सम्बंधित खबर अखबार में छापी गयी थी, वह सही खबर नहीं थी। बिना जाँच पड़ताल के किस तरह खबर को छाप दिया गया था और आज भी कहीं न कहीं ऐसा ही हो रहा है तो सवाल यह उठता है कि इतने वर्षो बाद भी पत्रकारिता जगत में कितना विकास और सुधार हुआ है?

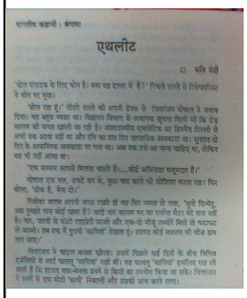

एथलीट

थोड़ा सा अभ्यास बहुत से उपदेशों से बेहतर है : महात्मा गांधी

Pankaj:Layout 1 2/22/2016 12:10 PM Page 4

एथलेटिक्स में दया शंकर, मनीष, नेहा और कंचन का रहा दबदबा

पंकज कुमार

वि.वि. वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के मेजर ध्यानचंद क्रीडा प्रांगण में सम्पन्न हुई 13 दिवसीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता के एथलेटिक्स स्पर्धा में छात्र दया शंकर मिश्रा और मनीष मिश्रा तो वहीं छात्रा कंचन कुमारी और कुमारी बी.एम. रंजिता कुडापे का दबदबा रहा। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में बीएड के छात्र दया मिश्रा ने तीन स्वर्ण व एक कांस्य पदक जीता और मनीष मिश्रा ने तीन स्वर्ण पदक हासिल किए। वहीं छात्राओं में हिन्दी साहित्य की कंचन कुमारी ने तीन स्वर्ण, दो रजत व एक कांस्य पर अपना कब्जा जमाया तो फ्रेंच डिप्लोमा की रंजिता कुडापे ने तीन स्वर्ण पदक हासिल की।

प्रतियोगिता के पुरूष वर्ग की 100 मीटर दौड़ में दया शंकर मिश्रा (बीएड) ने स्वर्ण, अमित कुमार (जनसंचार) ने रजत और शिव कुमार (मनोविज्ञान) ने कांस्य पदक हासिल किया जबकि महिला वर्ग में कंचन कुमार (हिन्दी साहित्य) ने स्वर्ण, नेहा देवानंद बलवीर (डिप्लोमा जनसंचार) ने रजत और सबिता कोल्हे (डायस्पोरा) ने कांस्य पदक प्राप्त किया। पुरूष वर्ग 200 मीटर दौड़ में दया शंकर मिश्रा (बीएड) ने स्वर्ण, आशिष वोपचे (बीएड) ने रजत और अमित कुमार (जनसंचार) ने कांस्य पदक जबकि महिला वर्ग में कंचन कुमार (हिन्दी साहित्य) ने स्वर्ण, नेहा देवानंद बलवीर (डिप्लोमा जनसंचार) ने रजत और सबिता कोल्हे (डायस्पोरा) ने कांस्य पदक हासिल किया। पुरूष वर्ग 400 मीटर दौड़ में आशिष वोपचे (बीएड) ने स्वर्ण, अमित कुमार (जनसंचार) ने रजत और मनीष मिश्रा (विकास एवं शांति अहिंसा) ने कांस्य पदक हासिल किया जबकि महिला वर्ग में कंचन कुमारी (हिन्दी साहित्य) ने स्वर्ण, नेहा देवानंद बलवीर (डिप्लोमा जनसंचार) ने रजत और चंचल कुमारी (बीएड) ने कांस्य पदक जीत अपनी उपस्थिति दर्ज की।

भाला फेंक प्रतियोगिता के पुरूष वर्ग में मनीष मिश्रा ने स्वर्ण, संघर्ष मिश्रा (जनसंचार) ने रजत और बी. वी फैला ने कांस्य पदक वहीं महिला वर्ग में कुमारी बीएम रंजिता कुडापे (फ्रेंच डिप्लोमा) ने स्वर्ण, जयंति हास्दा (हिन्दी साहित्य) ने रजत ओर प्रीति दुबे (बीएड) ने कांस्य पदक पर अपना कब्जा जमाया। चक्का फेक प्रतियोगिता के पुरूष वर्ग में मनीष मिश्र ने स्वर्ण, निखिल समर्थ ने रजत और जैनेन्द्र कुमार (एमबीए) ने कांस्य पदक हासिल किया जबकि महिला वर्ग में कुमारी बी.एम रंजिता कुडापे (फ्रेंच डिप्लोमा) ने स्वर्ण, जयंति हास्दा (हिन्दी साहित्य) ने रजत और कंचन कुमारी (बीएड) ने कांस्य पदक पाया।

गोला फेंक प्रतियोगिता में मनीष मिश्रा ने स्वर्ण, संजीव झा ने रजत और दया शंकर मिश्रा ने कांस्य जबकि महिला वर्ग में कुमारी रंजीता ने स्वर्ण, कंचन कुमारी (हिन्दी साहित्य) ने रजत और नेहा देवानंद बलवीर ने कांस्य पदक जीत कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

लम्बी कूद पुरूष वर्ग में दया शंकर मिश्रा ने स्वर्ण, ब्रजेश चौहान (पी.एचडी. अनुवाद) ने रजत और अमित कुमार (जनसंचार) ने कांस्य पदक हासिल किया वहीं महिला वर्ग में नेहा देवानंद बलवीर ने स्वर्ण, कंचन कुमारी ने रजत पदक हासिल कर अपनी उपस्थिति दर्ज की।

खेल प्रतियोगिता में पुरुषों से कमतर नहीं महिलाएँ

आबिद रजा

वि.वि. वर्धा। विश्वविधालय के ध्यानचंद क्रीड़ा स्थल पर पिछले दिनों वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 19 फरवरी को नागार्जुन सराय के प्रांगण में खेल प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। उन्होंने सभी विजेताओं व उपविजेताओं को अपनी शुभकामनायें दी। खेल प्रभारी व विकास एवं शांति अध्ययन के डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने कुलपति का से स्वागत किया। सभा में डॉ. राकेश मिश्र ने मंच संचालन के दायित्व का निर्वहन किया। डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने कहा कि आज छात्राएँ भी छात्रों से कहीं भी कमतर नहीं हैं, छात्राएँ भी खेल प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। इस अवसर पर खेल अध्यक्ष प्रो.विजय कुमार कौल, संयोजक डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, डॉ. राकेश मिश्र, डॉ. अरविन्द झा, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. सुप्रिया पाठक इत्यादि लोग उपस्थित थे।

कुलपति को पुष्प देकर स्वागत करते डॉ. विजय कौल, महिला विजेता अपने पदक के साथ और विजेता पुरषों को पुरस्कृत करते कुलपति

जनसंचार विभाग

अध्यक्ष
डॉ. कृपाशंकर चौबे
प्रोफेसर
डॉ. अनिल कुमार राय
सहायक प्रोफेसर
डॉ. धरवेश कठेरिया
डॉ. अख्तर आलम
श्री संदीप कुमार वर्मा
श्री राजेश लेहकपुरे
डॉ. रेणु सिंह
तकनीकी सहायक
श्री अरविंद कुमार
कार्यालय सहयोगी
श्री कुणाल वैद्य, श्री जावेद बेग, श्री अशोक कुमार, श्री गोखुल कु.

संपादकीय टीम
संपादक : कुमार प्रियतम
संपादन सहयोग
राजदीप सिंह राठौर, अमित धर्मेन्द्र मिश्रा, इम्तियाज अंसारी, पंकज
पृष्ठ सज्जा
राजेश आगरकर, पंकज कुमार